अक्तूबर मास के कृषि कार्य

फसलों में

धान

धान की पकी फसल की कटाई आरम्भ करें। कटाई से लगभग एक सप्ताह पहले खेत से पानी बाहर निकाल दें। फिर इसे धूप में अच्छी तरह सुखा कर ही बोरी में भरें।

बाजरा

यदि बाजरे के तुरंत बाद चना या रबी की कोई अन्य फसल बीजनी हो तो पौधों को नीचे से काट कर छोटे-छोटे भरोटे (बण्डल) बना लें और खेत के बाहर एकत्र कर लें। यदि रबी की कोई फसल न लेनी हो तो पकी फसल से बालें काट लें और पौधों को खेत में खड़ा रहने दें ताकि कुछ समय तक इन्हें हरे चारे के रूप में प्रयोग किया जा सके। अगर अरगट का प्रकोप हुआ हो तो प्रभावित फसल को हरे चारे या दाने के लिए प्रयोग न करें।

मक्की

समय पर बोई गई फसल की कटाई करें। संकर व विजय मक्की के पौधे पकने पर कभी-कभी हरे नजर आते हैं किन्तु जब ऊपर वाला छिलका पीले व भूरे रंग का हो जाये तो समझें कि फसल पक गई है।

कपास

अमेरिकन कपास की चुनाई 15-20 दिन के अन्तर पर व देसी कपास की चुनाई 8-10 दिन के अन्तर पर करें। प्रथम व अन्तिम चुनाई की कपास अलग एकत्र करें क्योंकि यह घटिया किस्म की होती है। चुनाई ओस खत्म होने के बाद प्रारम्भ करें। अमेरिकन कपास में इस माह के अन्त तक अन्तिम सिंचाई कर दें। टिण्डे व पत्ते खाने वाली सूण्डियों अथवा मिलीबग का प्रकोप हो तो गत माह बताई गई कीटनाशकों का प्रयोग करें व कीट नियंत्रण के अन्य उपाय भी अपनाएं।

उड़द व मूंग

पकने पर फसल की फौरन कटाई करें।

तोरिया, सरसों, राया व तारामीरा

तोरिया की फसल की खोदी करें। सरसों व राया की बिजाई इस महीने के तीसरे सप्ताह तक तथा तारामीरा की महीने भर तक कर सकते हैं। देसी सरसों की उन्नत किस्म बी एस एच नं. 1, राया की किस्म आर एच 30, वरुणा, लक्ष्मी, आर एच 781, आर एच 819, आर एच 9304, आर एच 9801 व आर बी 9901 (आर बी 24) व तारामीरा की फसल टी 27 ही बोयें। इन सभी फसलों के लिए 2 कि.ग्रा. बीज प्रति एकड़ काफी रहता है। सरसों व राया के बीज का उपचार एजोटोबैक्टर टीके के साथ लाभदायक है। इन फसलों को कतारों में 30 सैं.मी. की दूरी पर बीजें। बिजाई 'पोरा' विधि से करें। बारानी क्षेत्र के लिए राया आर एच 30, वरुणा (टी 59), आर एच 781 व आर एच 819 ही बोयें तथा कतार से कतार का फासला 45 सैं.मी. रखें।

असिंचित तोरिया, सरसों व राया में 16 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (35 कि.ग्रा. यूरिया) तथा 8 कि.ग्रा. फास्फोरस (50 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट) प्रति एकड़ बिजाई से पहले डालें।

सिंचित तोरिया व सरसों में 24 कि.ग्रा. नाइट्रोजन व 8

विस्तार शिक्षा निदेशालय, गांधी भवन
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

आभार : विस्तार शिक्षा निदेशालय, गांधी भवन
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

http://hau.ernet.in/coa/agromet.htm

http://hau.ernet.in/coa/agromet.htm

कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति एकड़ डालें तथा सिंचित राया में 32 कि.ग्रा. नाइट्रोजन व 12 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति एकड़ डालें। 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट भी प्रति एकड़ बिजाई से पहले डालें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा बिजाई के समय पोरें तथा शेष नाइट्रोजन की आधी मात्रा पहली सिंचाई पर डालें। तिलहनी फसलों (तोरिया, सरसों व राया) में फास्फोरस की सिफारिश की गई मात्रा सिंगल सुपर फास्फेट द्वारा ही डालें क्योंकि इस खाद द्वारा सल्फर की जरूरत भी पूरी हो जाती है। अगर फास्फोरस डी. ए. पी. द्वारा दे रहे हैं तो 100 कि.ग्रा. जिप्सम प्रति एकड़ डालें।

यदि धौलिया अथवा आरामक्खी का आक्रमण हो तो 200 मि.ली. मैलाथियान (सायथियान) 50 ई.सी. को 200 लीटर पानी में प्रति एकड़ फसल पर छिड़कें। बालों वाली सूण्डी के लिए 250 मि.ली. मोनोक्रोटोफास 36 एस. एल. या 200 मि.ली. डाईक्लोर्वास 76 ई.सी. ~~या 500 मि.ली. एण्डोसल्फान 35 ई.सी.~~ 200-250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़कें।

अरहर

इस समय फसल में फली छेदक सूण्डी काफी हानि करती है। इसके लिए ~~600 मि.ली. एण्डोसल्फान 35 ई.सी. या~~ 300 मि.ली. मोनोक्रोटाफास 36 एस. एल. या 600 मि.ली. क्विनलफास 25 ई.सी. को 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़कें।

लूसर्न (रिजका)

इसकी बिजाई इस माह के अन्तिम सप्ताह में करें। लूसर्न टी 9 अच्छी किस्म है। एक एकड़ खेत के लिए 4-5 कि.ग्रा. बीज काफी है। बिजाई कतारों में एक फुट के फासले पर करें। इसके बीज को भी लूसर्न का राइजोबियम का टीका लगाकर बोना चाहिये। लूसर्न बोते समय 22 कि.ग्रा. यूरिया तथा 250 कि.ग्रा. सुपर फास्फेट प्रति एकड़ डालें।

अलसी

इसकी बिजाई इस महीने के पहले पखवाड़े में करें। अलसी की के-2 किस्म बोने की सिफारिश की जाती है। बीज 20 कि.ग्रा. प्रति एकड़ प्रर्याप्त है। बिजाई कतारों में 23 सैं.मी. के फासले पर करें।

गेहूँ

बासमती धान आधारित फसल चक्र वाले क्षेत्रों में गेहूँ की सिंचित उपजाऊ भूमि पर समय पर बिजाई के लिए बाजरा व अन्य धान आधारित फसल चक्र वाले क्षेत्रों में (25 अक्तूबर से 15 नवम्बर तक) (25 अक्तूबर से 5 नवम्बर तक) डब्ल्यू एच-157, डब्ल्यू एच-147, डब्ल्यू एच-283, डब्ल्यू एच-542, पी बी डब्ल्यू-343, यू पी-2338, डब्ल्यू एच-533 एवं डब्ल्यू एच-711 किस्म का उचित समय है जबकि बाजरा व कपास फसल चक्र आधारित क्षेत्रों में गेहूँ की समय की बिजाई 15 नवम्बर तक पूर्ण कर लें। बारानी क्षेत्रों में सी 306 व डब्ल्यू एच-533 किस्मों की बिजाई अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक कर लेनी चाहिए। इसी प्रकार कठिया गेहूँ की किस्मों डब्ल्यू एच-896 एवं डब्ल्यू एच-912 की बिजाई का उत्तम समय अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवम्बर का प्रथम सप्ताह है।

डब्ल्यू एच-157 व डब्ल्यू एच-283 के लिए क्रमशः 50 व 45 किलोग्राम व अन्य किस्मों हेतु 40 कि.ग्रा. बीज प्रति एकड़ प्रयोग करें। गेहूँ की बिजाई बीज एवं उर्वरक ड्रिल से करनी चाहिए तथा बिजाई से पूर्व इसका केलिब्रेशन कर लेना चाहिए। लंबी बढ़ने वाली सी 306 किस्म की बिजाई 6-7 सैं.मी. गहरी करें जबकि अन्य किस्मों को 5-6 सैं.मी. गहरा बोएं। समय की बिजाई के लिए दो खुड्डों का फासला 20 सैं.मी. रखें।

जौ

बारानी क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्तूबर माह के दूसरे पखवाड़े में शुरू कर दें। सी 138 किस्म बारानी क्षेत्रों के लिए उत्तम है जबकि बी एच 393, सी 164, बी जी 25 एवं बी एच 75 की सीमित सिंचाई वाले क्षेत्रों के लिए सिफारिश करते हैं। सिंचित दशा में 35 कि.ग्रा. तथा बारानी दशा में 30 कि.ग्रा. बीज प्रति एकड़ सिफारिश करते हैं। फसल को कतारों में 'पोरा' से 22 सैं.मी. सिंचित क्षेत्र में तथा 18-20 सैं.मी. बारानी क्षेत्र में बीजें। सिंचित जौ में 24 कि.ग्रा. नत्रजन व 12 कि.ग्रा. फास्फोरस व 6 कि.ग्रा. पोटाश प्रति एकड़ दें। नत्रजन की आधी मात्रा बिजाई पर व आधी मात्रा पहली सिंचाई पर दें। बारानी जौ में 12 कि.ग्रा. नत्रजन व 6 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति एकड़ बिजाई पर पोरें। दीमक से बचाव के लिए 600 मि.ली. क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. या फारमोथियान 25 ई.सी. ~~या 750 मि.ली. एण्डोसल्फान 35 ई.सी.~~ को 12.5 लीटर पानी में मिलाकर एक क्विंटल बीज का बुवाई से एक दिन पहले उपचार करें।

आभार : विस्तार शिक्षा निदेशालय, गांधी भवन
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

http://hau.ernet.in/coa/agromet.htm

जई

अधिक कटाइयों के लिए जई की उन्नत किस्म एच एफ ओ 114 व हरियाणा जवी-8 की बिजाई इस माह के मध्य से शुरू करें। 40 कि.ग्रा. बीज प्रति एकड़ पर्याप्त है। बिजाई कतारों में 25 सैं.मी. के फासले पर करें। सोलह किलोग्राम प्रति एकड़ नाइट्रोजन (35 कि.ग्रा. यूरिया) बिजाई पर पोरें तथा इतना ही पहले पानी पर दें।

चना

देसी चना की बिजाई मध्य अक्तूबर तक तथा काबुली चने की बिजाई इस माह के आखिरी सप्ताह में करें। बारानी इलाकों में उन्नत किस्म एच 208 या हरियाणा चना नं. 1 बोयें। जहां सिंचाई का साधन हो या वर्षा अच्छी होती हो वहां हरियाणा चना-1, काबुली चना की हरियाणा काबुली नं. 1, एल 144, गौरा हिसारी किस्में बोयें। नम क्षेत्रों में सी 235 व हरियाणा चना नं. 3 किस्मों की बिजाई करें। नवीनतम किस्म हरियाणा चना नं. 5 की हरियाणा राज्य के सारे क्षेत्रों में बिजाई की जा सकती है। हरियाणा चना नं. 3 का 30-32 कि.ग्रा. व अन्य देसी किस्मों का 15-18 कि.ग्रा. तथा काबुली चने का लगभग 36 कि.ग्रा., गौरा हिसारी व हरियाणा चना नं. 1 का 24 से 26 कि.ग्रा. बीज प्रति एकड़ काफी है। बिजाई से पहले बीज का क्रमश: कीटनाशक व फफूंदनाशक टीके से उपचार करें। दीमक से बचाने के लिए ~~850 मि.ली. एण्डोसल्फान 35 ई.सी. या~~ मोनोक्रोटोफास 36 एस.एल. या 1500 मि.ली. क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. को पानी में मिलाकर कुल 2 लीटर घोल बनायें। ऐसे 2 लीटर घोल से 1 क्विंटल बीज को बीजने के एक दिन पूर्व पक्के फर्श या पॉलिथीन की शीट पर फैलाकर उपचारित करें। इसके बाद फफूंदनाशक बाविस्टिन (2.5 ग्राम) से प्रति किलोग्राम बीज का उपचार करें। बिजाई 'पोरा' विधि से 2 खूड़ों का फासला 30 सैं.मी. रखकर इस प्रकार करें कि बीज 10 सैं.मी. गहरा पड़े। इससे कम गहराई पर पड़ने पर उखेड़ा रोग लगने का भय रहता है। जहां खेत में आल की कमी हो तो 2 खूड़ों का फासला 45 सैं.मी. रख कर बिजाई के समय 12 कि.ग्रा. यूरिया व 100 कि.ग्रा. सुपर फास्फेट प्रति एकड़ ड्रिल करें। यदि डी. ए. पी. मिल जाये तो 34 कि.ग्रा. डी. ए. पी. ही प्रति एकड़ बिजाई के समय बीज के नीचे ड्रिल करें। चने के बीज को राइजोबियम का टीका अवश्य लगायें और बहुत रेतीली जमीन में 10 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट प्रति एकड़ के हिसाब से डालें।

अगेती बिजाई कभी न करें। दस अक्तूबर से पहले बिजाई करने से उखेड़ा ज्यादा आता है। बिजाई से पूर्व प्रति किलोग्राम बीज में 2.5 ग्राम बाविस्टिन मिलाकर बोयें। झुलसा रोग से बचाव के लिए सी 235 या हरियाणा चना नं. 3 किस्म ही बोयें। जिस खेत में अंगमारी का आक्रमण रहा हो वहां चने की फसल न लें।

बरसीम

यदि पिछले महीने बिजाई न कर सके हों तो इस महीने के पहले सप्ताह तक बिजाई पूरी कर लें। जिस जमीन में पहली बार बरसीम की बिजाई करनी हो उसमें बीज का टीकाकरण अति आवश्यक है। समय पर खेत में पानी लगाते रहें। 22 कि.ग्रा. यूरिया और 175 कि.ग्रा. सुपर फास्फेट प्रति एकड़ बिजाई से पहले छिट्टे द्वारा डालें। रेतीली तथा कमजोर जमीन में बिजाई से पहले 10 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट प्रति एकड़ प्रयोग करें। बरसीम और जई की मिश्रित फसल में 16 कि.ग्रा. अतिरिक्त नाइट्रोजन प्रति एकड़ के हिसाब से बिजाई के समय देनी चाहिए।

गन्ना

शरद्कालीन गन्ने की बिजाई का समय सितम्बर के आखिर से अक्तूबर के पहले सप्ताह तक है। शरद्कालीन किस्में सी ओ एच 56, सी ओ एच 92, सी ओ एच 64 (अगेती) व सी ओ एच 99, सी ओ एच 119, सी ओ 7717, सी ओ एस 8436 हैं। बिजाई के समय 45 कि.ग्रा. यूरिया तथा 125 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट प्रति एकड़ बीज के नीचे पोरें।

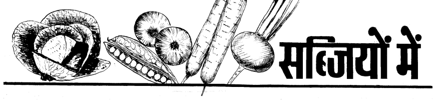

टमाटर

खेत से अधपके टमाटरों को तोड़कर बाजार में भेजने का प्रबन्ध करें। समय पर सिंचाई करें तथा विषाणु एवं फफूंद रोग से रक्षा के लिए 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. तथा 800 ग्राम डायथेन एम-45 को मिलाकर प्रति एकड़ फसल पर, तीन सप्ताह के अन्तर पर, नियमित रूप से छिड़काव करें। इस घोल के लिए लगभग 250 लीटर पानी की आवश्यकता होगी। फल

आभार : विस्तार शिक्षा निदेशालय, गांधी भवन
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

छेदक कीट के नियन्त्रण के लिए 500 ग्राम कार्बेरिल 50 घु.पा. या 500 मि.ली. एण्डोसल्फान 35 ई.सी. को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ फसल पर छिड़काव करें।

बैंगन

बैंगन के कच्चे फलों को समय पर तोड़कर बाजार में भेजें। समय पर फसल की सिंचाई करें। रस चूसने वाले कीड़ों के लिए 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें। फल छेदक सूण्डी की रोकथाम के लिए 60 मि.ली. स्पाइनोसेड (ट्रेसर 45 एस.सी.) या 500 मि.ली. एण्डोसल्फान 35 ई.सी. या 500 ग्राम कार्बेरिल 50 घु. पा. का 15 दिन के अन्तर पर बारी-बारी से प्रति एकड़ छिड़काव करें। तना छेदक कीड़े से ग्रस्त तनों व फलों को नियमित रूप से निकालते रहें तथा उन्हें नष्ट कर दें।

मिर्च

हरी मिर्च को खेत से तोड़कर बाजार में बेचने के लिए भेजें। उचित समय पर फसल की सिंचाई करते रहें। नाइट्रोजन खाद की मात्रा खेत में दी जा चुकी होगी। रस चूसने वाले कीड़ों की रोकथाम के लिए 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़कें।

अक्तूबर-नवम्बर माह में मिर्च की बसन्त ऋतु की फसल के लिए नर्सरी में बिजाई की जाती है। उन्नत किस्में एन पी 46-ए. या पूसा ज्वाला या पन्त सी-1 या हिसार शक्ति या हिसार विजय का बीज प्रयोग करें। एक एकड़ खेत के लिए लगभग 400 ग्राम बीज की आवश्यकता होगी। बिजाई से पहले बीज को 2.5 ग्राम एमीसान या थाइरम नामक दवा से उपचारित कर लें।

भिण्डी

भिण्डी के नर्म फलों को तोड़कर बाजार बेचने के लिए भेजें। आवश्यकता होने पर खेत में सिंचाई करें। नाइट्रोजन खाद दें। रस चूसने वाले और छेदक कीड़ों की रोकथाम के लिए 400 ग्राम कार्बेरिल 50 घु.पा. या 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को प्रति एकड़ 250 लीटर पानी में मिलाकर 15 दिन के अंतर पर छिड़काव करें।

कद्दू जाति की सब्जियां

कद्दू जाति की सब्जियों के फलों की तुड़ाई करें तथा उन्हें बाजार बेचने के लिए भेजें। फसल में नाइट्रोजन खाद दें। आवश्यकता होने पर फसल की सिंचाई करें। फल छेदक मक्खी की रोकथाम के लिए 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. या 500 ग्राम कार्बेरिल 50 घु.पा. या 250 मि.ली. फैनिट्रोथियान 50 ई.सी. को 1 कि.ग्रा. 250 ग्राम गुड़ और 250 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ खेत की बेलों पर छिड़काव करें। बेलों को चिट्टा रोग (पाऊडरी मिल्ड्यू) से बचाने के लिए 8-10 कि.ग्रा. बारीक गंधक के धूड़े का भुरकाव करें। धूड़ा सुबह या शाम के समय करें। डाउनी मिल्ड्यू से बचाव हेतु बेलों पर इण्डोफिल एम-45 या ब्लाइटॉक्स 50 के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

शकरकन्दी व अरबी

शकरकन्दी की फसल की देखभाल करें। आवश्यकता होने पर सिंचाई करें। अरबी की खुदाई का प्रबन्ध करें तथा बाजार बेचने के लिए भेजें। तैयार होने के लिए अरबी की फसल 130-160 दिन और शकरकन्दी की फसल 130-180 दिन ले लेती है।

फूलगोभी

फूलगोभी की अगेती किस्म पूसा कातकी की फसल की देखभाल करें। फसल के तैयार फूलों को काटकर बाजार भेजें। पछेती किस्म (स्नोबॉल-16) की बिजाई इस माह नर्सरी में की जा सकती है। बोने से पहले बीज को एमीसान या कैप्टान या थाइरम 2.5 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। अंकुरण के 6-7 दिनों बाद 0.2 प्रतिशत कैप्टान के घोल से (आर्द्र गलन बीमारी लगने पर) नर्सरी की सिंचाई करें।

हानिकारक कीटों, चेपा, कूबड़ वाले कीड़े, सूण्डी और डायमण्ड बैक मॉथ से रक्षा करने के लिए 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. या 375 मि.ली. एण्डोसल्फान 35 ई.सी. को 250 लीटर पानी में घोलकर एक एकड़ खेत में छिड़काव करें। बन्दगोभी, गाँठगोभी, मूली और शलगम में यदि कीटों का आक्रमण हो तो यही कीटनाशक प्रति एकड़ फसल पर छिड़कें। डायमण्ड बैक मॉथ की सूण्डी के लिए 300 मि.ली. डायजिनान 20 ई.सी. (बसुडीन/बैजानीन) या 60 मि.ली. डाइक्लोर्वास (न्यूवान/वैपोना) 76 ई.सी. या 400 ग्राम बी. टी. (बेसिलस थूरिजिएंसिस) का भी प्रति एकड़ छिड़काव कर सकते हैं।

बन्दगोभी और गाँठगोभी

बन्दगोभी तथा गाँठगोभी की बिजाई नर्सरी में इस मास में

आभार : विस्तार शिक्षा निदेशालय, गांधी भवन
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

http://hau.ernet.in/coa/agromet.htm

भी करें। बोने से पहले बीज को एमीसान या कैप्टान नामक दवा से उपचारित करें। 2.5 ग्राम फफूंदनाशक दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजों का उपचार करें।

पालक

पालक फसल की देखभाल करें तथा तैयार पत्तों को काटकर गुच्छों में बांधकर बाजार में भेजें। पालक की नई बिजाई भी की जा सकती है।

मूली, शलगम व गाजर

मूली, शलगम व गाजर की तैयार जड़ों को उखाड़कर तथा उन्हें धोकर बाजार के लिए भेजें। इस माह विलायती किस्मों के बीजों की बिजाई तैयार खेत में करें। गाजर की किस्म नैंटीज, मूली की किस्म जापानी ह्वाइट तथा सफेद आइसिकल तथा शलगम की पर्पल टॉप ह्वाईट ग्लोब प्रयोग में लाएं। मूली की फसल पर कीट नियंत्रण के लिए 250-400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 200-250 लीटर पानी में प्रति एकड़ छिड़कें।

मटर

मटर की अगेती फसल की देखभाल करते रहें। फल लगते ही सिंचाई करें। खरपतवार निकालते रहें। अक्तूबर माह में मटर की बोनविले किस्म की बिजाई तैयार खेत में करें। एक एकड़ के लिए लगभग 20-30 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। कतारों की दूरी 30-40 सैं.मी. रखें। खेत की तैयारी के समय 8 टन गोबर की खाद डालकर मिट्टी में मिला दें। बिजाई के समय 12 कि.ग्रा. यूरिया तथा 125 कि.ग्रा. सिंगल सुपरफास्फेट भूमि में बीज के नीचे पोरें। मटर के चुरड़ा (थ्रिप) कीट के नियंत्रण के लिए 60 मि.ली. सायपरमेथ्रिन 25 ई.सी. ~~या 500 मि.ली. एण्डोसल्फान 35 ई.सी.~~ को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ फसल पर छिड़काव करें।

जड़गलन, सूखा रोग तथा अन्य बीज या मिट्टी जनित रोगों से बचाव के लिए 2 ग्राम बाविस्टिन या कैप्टान प्रति किलोग्राम बीज की दर से बिजाई से पहले बीजोपचार करें।

लहसुन

लहसुन की बिजाई यदि पिछले माह नहीं की है तो अभी कर लें और एक माह बाद 16 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (35 कि.ग्रा. यूरिया खाद) से प्रति एकड़ की दर से टॉप ड्रेसिंग करें तथा सिंचाई करें।

प्याज (रबी)

प्याज के बीजों की नर्सरी में इस माह बिजाई करें। एक एकड़ खेत के लिए पौध तैयार करने के लिए लगभग 4-5 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होगी। अधिक उपज के लिए उन्नत किस्म हिसार-2 तथा पूसा रैड का ही प्रयोग करें। पौधशाला में पौध को रोगमुक्त रखना आवश्यक है।

आलू

आलू की उन्नत किस्म कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी बादशाह, कुफरी जवाहर, कुफरी सतलुज या कुफरी सिन्दूरी का प्रयोग करें। एक एकड़ खेत के लिए लगभग 12 क्विंटल बीज लगता है। उचित होगा कि किसान स्वयं के खेत में प्रयोग के लिए बीज 'सीड टैक्नीक' से तैयार करें। बिजाई के समय 16-20 टन सड़ी गोबर खाद 24 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (54 कि.ग्रा. यूरिया), 20 कि.ग्रा. फास्फोरस (120 कि.ग्रा. सिंगल सुपरफास्फेट) आवश्यकतानुसार और 20-40 कि.ग्रा. पोटाश (36-64 कि. ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रति एकड़ की दर से दें। आलू के बीजों को लगभग 10-15 सैं.मी. की गहराई पर बीजें। बिजाई के समय बीजों का अंकुरित होना आवश्यक है। अच्छा होगा कि पूरे आलू ही बीजें। स्वस्थ रोगरहित प्रमाणित बीज ही प्रयोग करें। आलू बीजने से पहले बीज को 5-10 मिनट तक 0.25 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 के घोल में रखकर उपचारित करें। बिजाई के बाद आवश्यकता होने पर खेत में सिंचाई करें। सिंचाई करते समय ध्यान रखें कि पानी आधी डोलों से ऊपर न जाये।

आलू फसल की खरपतवारों से रक्षा करने के लिए बिजाई के लगभग 10-12 दिनों बाद जब 10 प्रतिशत बीज अंकुरित हो चुके हों तो नाईट्राफिन नामक खरपतवारनाशक दवा के 2.5-3 लीटर घोल प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

हरा तेला और सफेद मक्खी की रोकथाम हेतु 300 मि.ली. डाईमेथोएट 30 ई.सी. या आक्सीडेमेटान मिथाईल 25 ई.सी. को 200-300 लीटर पानी में मिलाकर 10 दिन के अंतर पर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

आभार : विस्तार शिक्षा निदेशालय, गांधी भवन
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

http://hau.ernet.in/coa/agromet.htm

http://hau.ernet.in/coa/agromet.htm

प्याज (खरीफ)

फसल की खरपतवारों से रक्षा करें और नियमित सिंचाई करें। यदि पौधों के पास की मिट्टी वर्षा से बह गई हो तो पौधों पर मिट्टी चढ़ाएं। नाइट्रोजन खाद से दो बार टॉप ड्रैसिंग करने की आवश्यकता होती है- प्रथम बार पौधरोपण/बिजाई के लगभग एक माह बाद तथा दोबारा इसके एक माह बाद करें। हर बार 16 किलोग्राम नाइट्रोजन(35 कि.ग्रा. यूरिया) प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें तथा उसके पश्चात् सिंचाई करें। फसल की हानिकारक कीट, थ्रिप से रक्षा के लिए 300 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 250 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें। पर्पल ब्लाच नामक बीमारी के लक्षण दिखते ही फसल पर 500 ग्राम फाइटोलान या 400 ग्राम डाईथेन एम 45 को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ फसल में प्रयोग करें तथा आवश्यकता होने पर 10-15 दिनों बाद दोहराएं। कीटनाशक व फफूंदनाशक घोल में सेल्वेट-99 दस ग्राम या टाईट्रोन 50 मि.ली. प्रति 100 लीटर घोल में मिलाना आवश्यक है।

अन्य सब्जियां

ग्वार व लोबिया की फलियों को तोड़ कर बाजार में बेचने के लिए भेजें। यदि सलाद की पौध तैयार हो तो रोपाई करें। मेथी व धनिया की बिजाई भी इस माह में की जा सकती है। एक एकड़ फसल के लिए 8-10 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है।

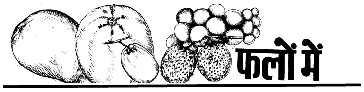

वर्षा का अधिक पानी निकालना, वायुरोधक और फल वृक्षों की फालतू टहनियां काटना, नए लगाए पौधों की देखभाल करना, घास-फूस निकालना, पोषक तत्त्व देना, खाद का इंतजाम करना, निराई-गुड़ाई, रबी की बीच में बोई जाने वाली फसलों का बीजना और फल बेचने का प्रबंध करना आदि क्रियाएं बाग-बगीचे में करनी हैं।

पौधे लगाने का समय तो समाप्त हो गया। अगर अच्छे पौधे मिलते हों तो अब भी लगाए जा सकते हैं। लीची के पौधे इस माह में लगाने चाहिएं। अगर जुलाई-सितम्बर माह में लगाए पौधे मर गए हैं तो खाली स्थान पर उसी किस्म के पौधे लगाएं। अगर मूलवृंत पर कोई टहनी निकलती है तो उसे हर 15 दिन के बाद काट दें।

जट्टी-खट्टी या कलोपेटरा पर संगतरा व माल्टा की पौध चालू रखें। फरवरी में बिजाई की गई जट्टी-खट्टी को तैयार क्यारियों में बदलें।

नींबू जाति के पौधे

इन पौधों के पत्तों व फलों पर अगर पोषक तत्त्व की कमी दिखाई दे तो जिंक सल्फेट 2.5 कि.ग्रा., कॉपर सल्फेट 2 कि.ग्रा. और चूना 2.25 कि.ग्रा. को 500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। माल्टे के अच्छी तरह पके हुए फल तोड़ें और बेचने का प्रबंध करें। कीड़ों की रोकथाम के लिए यदि सितम्बर में बताई गई कीटनाशक दवा का छिड़काव न किया गया हो तो इस माह के शुरू में छिड़काव करें।

नींबू वर्गीय फलों को कैकर रोगों से बचाने के लिए कॉपर आक्सीक्लोराईड 0.3 प्रतिशत का छिड़काव करें। पहला छिड़काव अक्तूबर में, दूसरा छिड़काव दिसम्बर में व तीसरा छिड़काव फरवरी में करें। छाल खाने वाले कीड़ों का आक्रमण हो तो 10 मि.ली. मोनोक्रोटोफास 36 एस.एल. या मिथाइल पैराथियान 50 ई.सी. को 10 लीटर पानी में मिलाकर इस घोल का छेद के चारों ओर लेप कर दें।

बेर

नाइट्रोजन वाली खाद की बाकी बची आधी मात्रा भी (0.5-1.0 कि.ग्रा. किसान यूरिया 500 ग्राम-1 कि.ग्रा. यूरिया) प्रति पेड़ के हिसाब से इस महीने के आखिर में डालकर सिंचाई करें।

पाऊडरी मिल्ड्यू रोग से बचाव के लिए 200 लीटर पानी में 400 ग्राम सैल्फैक्स या 200 मि.ली. कैराथेन का घोल बनाकर भली-भांति छिड़काव करें। छाल खाने वाले कीड़ों हेतु नींबू जाति के पौधों में बताया गया उपचार करें।

आम

निराई-गुड़ाई करें जिससे कि मिलीबग के लारवे सूर्य की रोशनी से खत्म हो जाएं।

आभार : विस्तार शिक्षा निदेशालय, गांधी भवन
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

http://hau.ernet.in/coa/agromet.htm

लीची

लीची के पौधे इस माह में लगाए जा सकते हैं लेकिन यह ध्यान रखें कि पुराने पौधों के नीचे से थोड़ी मिट्टी लेकर नए पौधों के गड्ढों में अवश्य डालें।

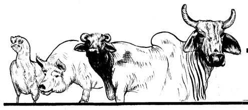

पशुओं में

गाय-भैंस

सर्दी का मौसम आने वाला है। अत: अपने पशुओं को सर्दी से बचाने के लिए सभी प्रकार के प्रबंध कर लें। पशुओं के दाने को सूखे स्थान पर रखें तथा नमी से बचाएं।

इस मौसम में भैंस गर्मी में आती है और जब वह बोलती है, उसकी योनि से सफेद रंग की तारें छूटती हैं और वह बार-बार पेशाब करती है। भैंस में गर्मी के लक्षण यदि सांय के समय देखे गये हों तो उसे अगली सुबह ही नये दूध कराना चाहिये और यदि लक्षण सुबह देखे गये हों तो सायं को कराना चाहिए। गर्मी में आने के 8-10 घण्टे के बाद मिलाई कराने से गर्भ ठहरने की सम्भावना बढ़ती है। नये दूध कराने के लिए अच्छा मुर्रा नस्ल का झोटा देखें या निकट के कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र पर ले जायें। यदि भैंस गर्मी में न आती हो तो पशु चिकित्सक से उसकी जांच करवायें। नियमित समय पर भैंस को गर्मी में लाने के लिए उसे सन्तुलित आहार खिलायें और अच्छी किस्म के 50 ग्राम खनिज मिश्रण प्रतिदिन दें।

भेड़ और बकरियां

इस मौसम में पशुओं के पेट में कीड़े हो जाते हैं। भेड़ों के पेट के अन्दर के परजीवियों को मारने के लिए उनको नियमित रूप से कृमिनाशक दवा पशु चिकित्सक की सलाह से पिलायें। पशुओं को हवादार आवास में रखें, बन्द घर में न रखें, नहीं तो पशुओं की दम घुटने से मृत्यु हो सकती है।

अच्छी और अधिक ऊन लेने के लिए आप अपनी देसी भेड़ों को उत्तम नस्ल के मेंड़ों से मिलवायें ताकि अच्छी नस्ल की भेड़ें उत्पन्न हो सकें। उत्तम नस्ल के मेंड़ों के लिए इस विश्वविद्यालय के पशु विज्ञान महाविद्यालय से सम्पर्क करें।

कुक्कुट

हर महीने मुर्गियों को कृमिनाशक दवा पशु चिकित्सक की सलाह पर पिलायें। यदि यह दवा न पिलाई जाए तो उनके पेट में कीड़े हो जाते हैं जो उनके विकास को रोकते हैं और साथ ही अण्डों का उत्पादन घट जाता है और उनमें बीमारी लगने की सम्भावना बढ़ जाती है।

छोटे चूज़ों की खुराक में बाईफ्रान या एम्प्रोल आदि दवा का प्रयोग करें ताकि उन्हें खूनी दस्त की बीमारी न लगे। मुर्गियों को सन्तुलित आहार दें जिसमें प्रोटीन, एनर्जी और दूसरे तत्त्वों की पूरी मात्रा हो। यदि सन्तुलित आहार देने से अण्डों का उत्पादन कम हो जाये तो आहार की जाँच प्रयोगशाला से करवायें। बिछावन को दिन में दो बार पलटें ताकि वह सूखता रहे। मुर्गी दाने की अफलाटोक्सिन नामक विषैले पदार्थ के लिए जाँच करवायें। मुर्गियों को 16 घण्टे रोशनी दें।

गृह विज्ञान

- सफाई का खास ध्यान रखें। यदि वर्षा का पानी घर के आसपास इकट्ठा हो गया हो तो मच्छरों की वृद्धि रोकने के लिए उसमें मिट्टी का तेल छिड़कें।
- अनाज तथा दालों में समय-समय पर सुरसुरी देखते रहें, अगर आक्रमण हो तो बचाव के उपाय करें।
- रसोई की वस्तुएं अगर घर में अधिक मात्रा में हैं तो उन्हें कभी-कभी धूप लगवायें जिससे कीटाणु उत्पन्न नहीं होते।
- चमड़ी को फटने से बचाने के लिए गर्म पानी से धोकर सरसों का तेल या मलाई या वैसलीन का प्रयोग करें। ●

आभार : विस्तार शिक्षा निदेशालय, गांधी भवन
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार